नानाई लोक कथा

कोटुरा
हवाओं के भगवान

चित्र: एन. कोर्नेयेवा

हिंदी: अरविन्द गुप्ता

बहुत समय पहले, एक खानाबदोश शिविर में, एक बूढ़ा आदमी अपनी तीन बेटियों के साथ रहता था. उनमें से सबसे छोटी बेटी तीनों में सबसे दयालु और चतुर थी.

बूढ़ा बहुत गरीब था. उसका चूम - खालों से बना तम्बू, पुराना था और छेदों से भरा हुआ था. उसके पास पहनने के लिए बहुत कम गर्म कपड़े थे. जब ठंड बहुत भयंकर होती तो बूढ़ा आदमी अपनी तीन बेटियों के साथ आग के पास बैठ जाता था और खुद को गर्म रखने की कोशिश करता था. रात में, बिस्तर में सोने से पहले, वे आग बुझाते थे और फिर सुबह तक ठंड से कांपते रहते थे.

एक बार, सर्दियों के बीच में, टुंड्रा पर एक भयानक बर्फ़ीला तूफ़ान आया. हवा एक दिन चली, दूसरे दिन चली, तीसरे दिन चली, और ऐसा जान पड़ा मानो सारे तम्बू उड़ जायेंगे. लोगों ने बाहर निकलने की हिम्मत नहीं की और वे ठंड में भूखे अपने तम्बुओं में बैठे रहे.

उसी तरह, बूढ़ा आदमी और उसकी तीन बेटियां भी अपने तम्बू में बैठे हुए तूफ़ान की आवाज़ सुनते रहे. फिर बूढ़े आदमी ने कहा:

"हम इस बर्फ़ीले तूफ़ान से कभी बच नहीं पाएंगे. उन्हें हवाओं के देवता कोटुरा ने भेजा है. वो गुस्से में लग रहे हैं और वो हम से उनके लिए एक अच्छी पत्नी भेजने का इंतज़ार कर रहे हैं. तुम्हें, मेरी सबसे बड़ी बेटी, को कोटुरा के पास जाना होगा अन्यथा हमारे सभी लोग नष्ट हो जायेंगे. तुम्हें जाकर देवता से बर्फ़ीला तूफ़ान रोकने की विनती करनी होगी."

"मैं उसके पास कैसे जा सकती हूं?" लड़की ने पूछा "मुझे तो रास्ता तक नहीं पता."

"मैं तुम्हें एक छोटी सी स्लेज दूंगा. उसे हवा की ओर रखो, उसे धक्का दो और फिर उसके पीछे चलो. फिर हवा, तुम्हारे कोट की डोरियां खोल देगी, लेकिन तुम्हें उन्हें बांधने के लिए नहीं रुकना. फिर बर्फ तुम्हारे जूतों के अंदर घुस जाएगी, लेकिन तुम जूतों को हिलाने के लिए नहीं रुकना. जब तक तुम किसी ऊंचे पहाड़ पर न पहुंचो, तब तक बिल्कुल नहीं रुकना. पहाड़ पर चढ़ना, और जब तुम उसकी चोटी पर पहुंच जाओ, तभी अपने जूतों से बर्फ हटाने और कोट की डोरियों को बांधने के लिए रुकना. धीरे-धीरे एक छोटा पक्षी तुम्हारे पास उड़कर आएगा और तुम्हारे कंधे पर बैठ जाएगा. उसे भगाना नहीं, उसके प्रति दयालु होना और उसे धीरे से प्यार करना. फिर अपनी स्लेज में बैठना और पहाड़ से नीचे उतरना. स्लेज उड़ जाएगी और तुम्हें सीधे कोटुरा के तम्बू के दरवाजे पर ले जाएगी. तम्बू में प्रवेश करना, लेकिन कुछ भी मत छूना. बस वहीं बैठना और प्रतीक्षा करना. जब कोटुरा आए, तो वो सब करना जो वो तुमसे कहे."

सबसे बड़ी बेटी ने अपना फर कोट पहना, अपने पिता द्वारा दी गई स्लेज को इस प्रकार रखा कि उसका रुख हवा की ओर हो, और फिर उसे फिसलने के लिए धक्का दिया.

कुछ दूर चलने के बाद उसके कोट की डोरियां खुल गईं, बर्फ उसके जूतों में घुस गई और उसे बहुत, बहुत ठंड महसूस हुई. लेकिन उसने वैसा नहीं किया जैसा पिता ने उसे बताया था. वो रुक गई और वो अपने कोट की डोरियां बांधने लगी और अपने जूतों से बर्फ हटाने लगी.

उसके बाद वो हवा का सामना करते हुए वो आगे बढ़ी. वो बहुत देर तक चलती रही और आख़िरकार उसे एक ऊंचा पहाड़ दिखाई दिया. जैसे ही वह उस पर चढ़ी, तभी एक छोटा पक्षी उड़कर उसके पास आया और वो उसके कंधे पर बैठने ही वाला था. लेकिन सबसे बड़ी बेटी ने पक्षी को भगाने के लिए अपने हाथ हिलाए. फिर पक्षी थोड़ी देर तक उसके ऊपर चक्कर लगाता रहा और फिर वो उड़ गया.

सबसे बड़ी बेटी अपनी स्लेज में चढ़ गई और पहाड़ी के किनारे से नीचे चली. फिर स्लेज एक बड़े से तम्बू के सामने आकर रुक गई.

लड़की अंदर गई और उसने चारों ओर देखा. पहली चीज़ जो उसने देखी वो भुने हुए हिरण के मांस का एक बड़ा टुकड़ा था. उसने आग जलाई, खुद को गर्म किया और फिर वो मांस से चर्बी के टुकड़े फाड़ने लगी.

उसने एक टुकड़े को फाड़कर खाया, और जब वो भरपेट खाना खा चुकी तभी उसने अचानक किसी को तम्बू की ओर आते हुए सुना. फिर प्रवेश द्वार पर लटकी खाल को किसी ने हटाया और एक युवा राक्षस ने अंदर प्रवेश किया. वो खुद कोटुरा थे. उन्होंने सबसे बड़ी बेटी की ओर देखा और कहा:

"तुम कहां से आई हो, महिला, और तुम यहां क्या चाहती हो?"

"मेरे पिता ने मुझे आपके पास भेजा है," सबसे बड़ी बेटी ने उत्तर दिया.

"उन्होंने ऐसा क्यों किया?"

“ताकि आप मुझे अपनी पत्नी बनाएं.”

कोटुरा ने कहा, "मैं शिकार पर गया था और कुछ मांस वापस लाया हूं. अब जाओ और उसे मेरे लिए पकाओ."

सबसे बड़ी बेटी ने वैसा ही किया जैसा उसे बताया गया, और जब मांस तैयार हो गया, तो कोटुरा ने उससे मांस को बर्तन से बाहर निकालने और उसे दो भागों में विभाजित करने को कहा.

"तुम और मैं मांस का आधा हिस्सा खाएंगे," उन्होंने कहा, "और तुम दूसरे आधे को, लकड़ी की तश्तरी में रखकर पड़ोसी तम्बू में ले जाओ. खुद तम्बू में मत जाना बल्कि प्रवेश द्वार पर ही प्रतीक्षा करना. एक बुढ़िया तुम्हारे पास आएगी. उसे मांस देना और तब तक प्रतीक्षा करना जब तक वो खाली तश्तरी वापस न लाकर दे."

बड़ी बेटी मांस लेकर बाहर चली गई. हवा तेज़ चल रही थी और बर्फ़ गिर रही थी, और काफी अंधेरा था. ऐसे तूफ़ान में कोई कैसे कुछ खोज पाता?... सबसे बड़ी बेटी थोड़ी दूर गई, रुकी, उसने कुछ देर सोचा और फिर उसने मांस को बर्फ में फेंक दिया. उसके बाद वो खाली तश्तरी लेकर कोटुरा के पास वापस गई.

कोटुरा ने उसकी ओर देखा.

"क्या तुमने हमारे पड़ोसी को मांस दिया?" उसने पूछा.

"हां, मैंने दिया," सबसे बड़ी बेटी ने उत्तर दिया.

"मुझे तश्तरी दिखाओ, मैं देखना चाहता हूँ कि उसने बदले में तुम्हें क्या दिया."

सबसे बड़ी बेटी ने उसे खाली तश्तरी दिखाई, लेकिन कोटुरा ने कुछ नहीं कहा. उसने अपने हिस्से का मांस खाया और वो सो गया.

प्रातःकाल वो उठा, और तम्बू में कुछ मृग की खालें लाया और उसने कहा:

"अब मैं शिकार पर जा रहा हूं. तुम इन खालों से मेरे लिए एक नया कोट, नए जूते और दस्ताने बनाना. जब मैं वापस आऊंगा तो उन्हें पहनूँगा और देखूंगा कि तुम्हारे हाथ कितने चतुर हैं."

और इन शब्दों के साथ, कोटुरा टुंड्रा में शिकार करने चला गया, और सबसे बड़ी बेटी काम करने लगी. अचानक प्रवेश द्वार पर लटकी खाल उठी और फिर भूरे बालों वाली एक बूढ़ी औरत अंदर आई.

"मेरी आंख में कुछ चला गया है, बच्ची," उसने कहा. "देखो, क्या तुम उसे बाहर निकाल सकती हो."

"मेरे पास उसके लिए समय नहीं है," बड़ी बेटी ने उत्तर दिया, "मैं काफी व्यस्त हूं."

बुढ़िया ने कुछ नहीं कहा. उसने मुंह फेरा और वो तम्बू के बाहर चली गई. सबसे बड़ी बेटी अकेली रह गई, उसने जल्दी से खालों को चाकू से काटना शुरू किया, शाम तक उसे अपना काम खत्म करने की जल्दी थी. दरअसल, वो इतनी जल्दी में थी कि उसने कपड़े अच्छे से बनाने की कोशिश भी नहीं की. उसके पास सिलाई करने के लिए कोई सुई नहीं थी और काम करने के लिए केवल एक ही दिन था, इसलिए वो मुश्किल से ही कुछ काम कर पाई.

जब कोटुरा वापस आया तो शाम हो चुकी थी.

"क्या मेरे नए कपड़े तैयार हैं?" उसने पूछा.

"वे तैयार हैं," बड़ी बेटी ने उत्तर दिया.

कोटुरा ने कपड़े ले लिए, उसने उन पर अपने हाथ फिराए, पर छूने पर उसे खाल खुरदरी लगी. कपड़े बहुत बुरी तरह से बने थे. उसने देखा कि कपड़े खराब तरीके से काटे गए थे, लापरवाही से सिले गए थे और वे उसके लिए बहुत छोटे थे.

इस पर वो बहुत गुस्सा हुआ और उसने बड़ी बेटी को तम्बू से बाहर फेंक दिया. उसने उसे बहुत दूर फेंक दिया. वो बर्फ के बहाव में गिर गई और वो वहां तब तक पड़ी रही जब तक कि वो मर नहीं गई.

उसके बाद हवा के झोंके पहले से भी अधिक तीव्र हो गये.

बूढ़ा आदमी अपने कमरे में बैठा था. उसने दिन-ब-दिन हवा की गड़गड़ाहट और तूफ़ान को सुना और कहा:

"बड़ी बेटी ने मेरी बातों पर ध्यान नहीं दिया. मैंने जो कहा था उसने वैसा नहीं किया. इसीलिए हवा ने गरजना बंद नहीं किया है. कोटुरा गुस्से में है. इसलिए मेरी दूसरी बेटी, तुम्हें उनके पास जाना होगा."

बूढ़े आदमी ने एक छोटी सी स्लेज बनाई, उसने दूसरी बेटी को वो सब कुछ बताया जो उसने सबसे बड़ी बेटी को बताया था, और उसने उसे कोटुरा के पास भेज दिया. वो खुद अपनी सबसे छोटी बेटी के साथ तम्बू में ही रहा और बर्फ़ीला तूफ़ान रुकने का इंतज़ार करता रहा.

दूसरी बेटी ने स्लेज को इस प्रकार खड़ा किया कि वो हवा का सामना करे और फिर उसे धक्का देते हुए उसके पीछे चली. चलते-चलते उसके कोट की डोरियां खुल गईं और बर्फ उसके जूतों में भर गई. क्योंकि बहुत ठंडी थी, इसलिए वो अपने पिता के आदेश को भूल गई और उसने अपने जूतों से बर्फ हटाई और जितनी जल्दी उससे हो सका उसने अपने कोट की डोरियां बांधीं.

वो पहाड़ के पास आई और उस पर चढ़ गई. उसने छोटे पक्षी को देखकर हाथ हिलाकर उसे भगा दिया. फिर वो अपनी स्लेज में बैठी और पहाड़ी से नीचे उतरकर सीधे कोटुरा के तम्बू तक पहुंची.
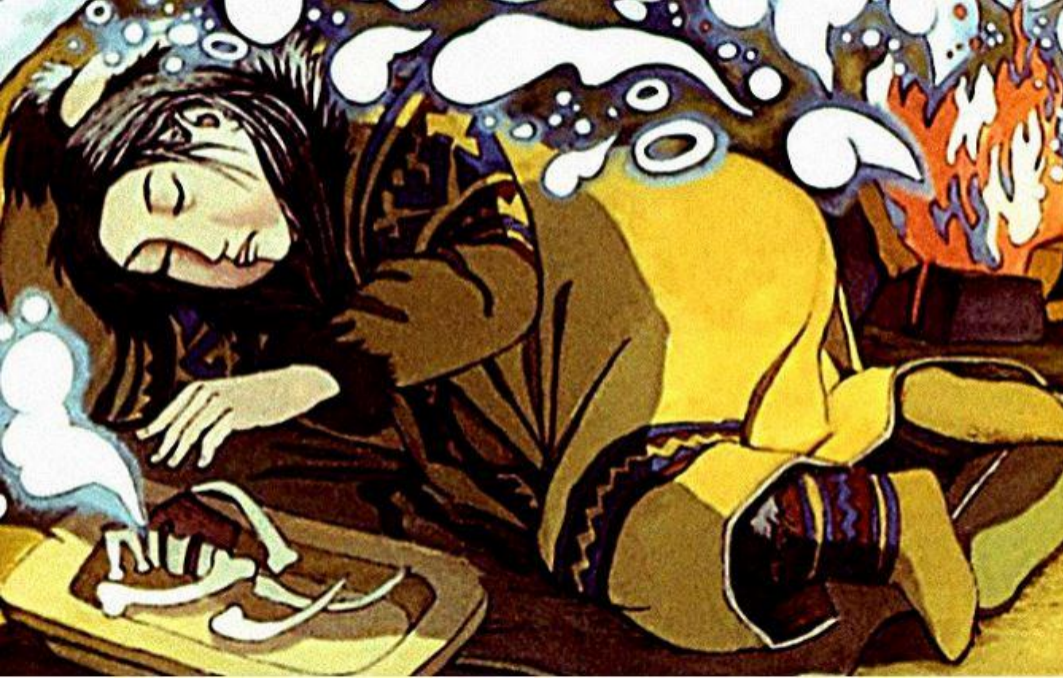
उसने तम्बू में प्रवेश किया, आग जलाई, भरपेट हिरण का मांस खाया और फिर वहां कोटुरा की प्रतीक्षा करने के लिए बैठ गई.

कोटुरा अपने शिकार से वापस आया, उसने दूसरी बेटी को देखा और उससे पूछा:

"तुम मेरे पास क्यों आई हो?"

"मेरे पिता ने मुझे आपके पास भेजा है," दूसरी बेटी ने उत्तर दिया.

"उन्होंने ऐसा क्यों किया है?"

“ताकि आप मुझे अपनी पत्नी बना सकें.”

"फिर तुम वहां क्यों बैठी हो, मैं भूखा हूं, जल्दी करो और मेरे लिए कुछ मांस पकाओ."

जब मांस तैयार हो गया, तो कोटुरा ने दूसरी बेटी को उसे तश्तरी से निकालने और दो भागों में काटने का आदेश दिया.

"तुम और मैं मांस का आधा हिस्सा खाएंगे." कोटुरा ने कहा, "जहां तक दूसरे हिस्से की बात है, तुम उसे उस लकड़ी की तश्तरी में रखो और पड़ोसी तम्बू में ले जाओ. खुद तम्बू में मत घुसना बल्कि उसके बाहर खड़ी रहना और अपनी तश्तरी के वापिस आने की प्रतीक्षा करना."
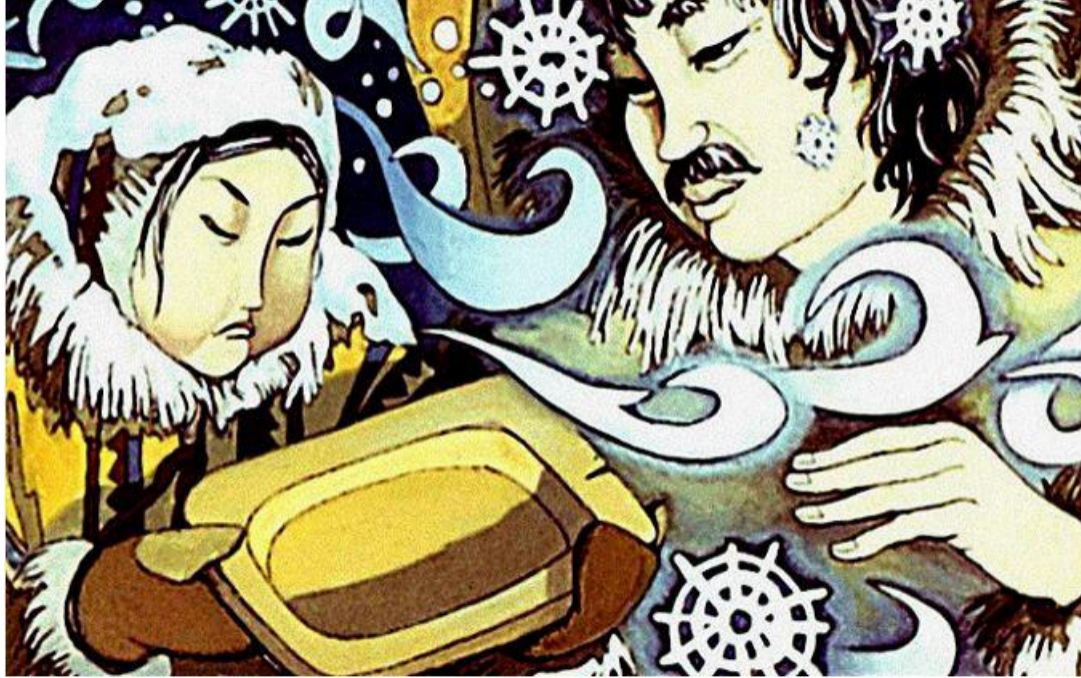
दूसरी बेटी मांस लेकर बाहर चली गई. हवा तेज़ चल रही थी और बर्फ़ तेज़ी से बह रही थी और कोई भी रास्ता पता करना मुश्किल था. इसलिए, उसे और आगे जाना ठीक नहीं लगा. उसने मांस को बर्फ में फेंक दिया. वो कुछ देर वहीं खड़ी रही और फिर वापस कोटुरा के पास चली गई.

"क्या तुमने उन्हें मांस दिया?" कोटुरा ने पूछा.

"हां, मैंने दिया," दूसरी बेटी ने उत्तर दिया.

"तुम बहुत जल्दी वापस आ गईं. मुझे तश्तरी दिखाओ, मैं देखना चाहता हूं कि उसने बदले में तुम्हें क्या दिया."

दूसरी बेटी ने वैसा ही किया जैसा उससे कहा गया और जब कोटुरा ने खाली तश्तरी देखी, तो उसने एक शब्द भी नहीं कहा और वो बिस्तर पर सोने चला गया.
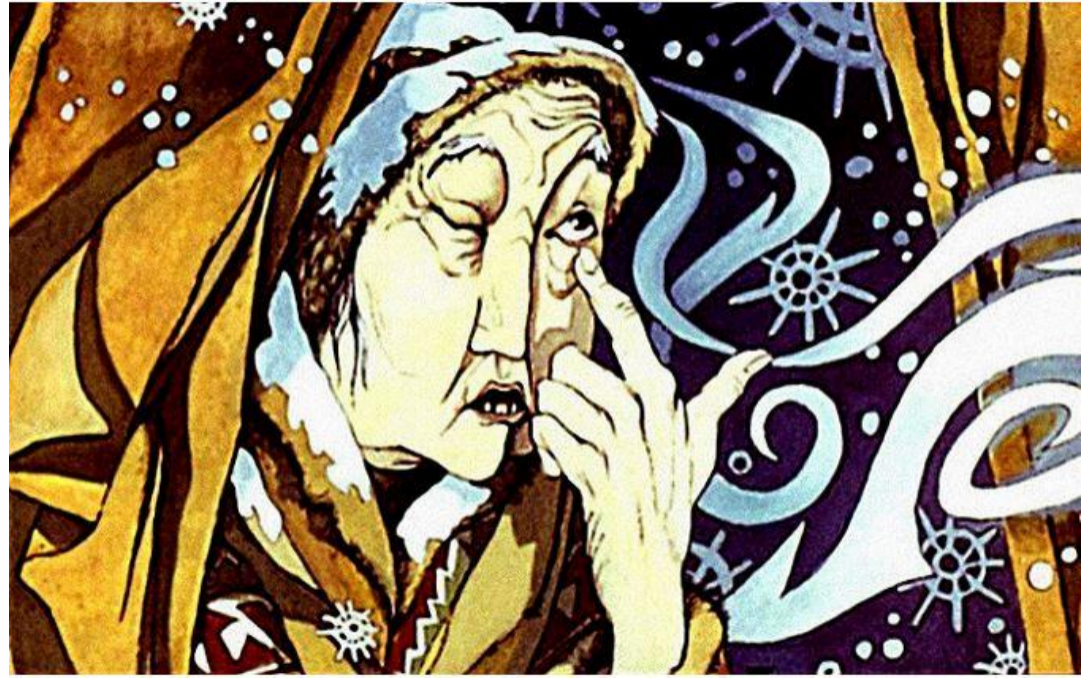
सुबह वह कुछ हिरण की खालें लाया और उसने दूसरी बेटी से कहा कि वो उन खालों से, शाम तक उसके लिए कुछ नए कपड़े बनाए.

"जल्दी से काम पर लग जाओ," कोटुरा ने कहा, "शाम को मैं देखूंगा कि तुम कितनी अच्छी तरह सिलाई कर सकती हो."

इन शब्दों के साथ कोटुरा शिकार करने चला गया, और दूसरी बेटी काम करने लगी. वो बहुत जल्दी में थी, क्योंकि किसी भी तरह उसे शाम तक सब काम निपटाना था. अचानक भूरे बालों वाली एक बूढ़ी औरत तम्बू में आई.

"मेरी आंख में एक तिनका घुस गया है, बेटी," उसने कहा, "कृपया उसे बाहर निकाल दो. मैं वो काम खुद नहीं कर सकती."

"माफ़ करें, मैं अभी बहुत व्यस्त हूं!" दूसरी बेटी ने उत्तर दिया. "तुम चली जाओ, और मुझे अपना काम करने दो."

फिर बुढ़िया ने उसकी ओर देखा और वो बिना कुछ कहे वहां से चली गई.

जब कोटुरा वापस आई तो रात हो चुकी थी.

"क्या मेरे नए कपड़े तैयार हैं?" उसने पूछा.

"हां, वे तैयार हैं," दूसरी बेटी ने उत्तर दिया.

"फिर मुझे उन्हें पहनकर देखने दो."

कोटुरा ने कपड़े पहने, और उसने देखा कि वे बुरी तरह से काटे गए थे और बहुत छोटे थे और उनकी सिलाई तिरछी थी. कोटुरा को बहुत गुस्सा आया. उसने दूसरी बेटी को भी वहीं फेंक दिया जहां उसने उसकी बड़ी बहन को फेंका था, और फिर वो भी मर गई.

बूढ़ा आदमी अपनी सबसे छोटी बेटी के साथ अपने कमरे में बैठकर तूफ़ान शांत होने के लिए व्यर्थ में विलाप कर रहा था. हवा पहले से भी अधिक तेज़ हो गई थी और ऐसा लग रहा था मानो किसी भी क्षण उनका तम्बू उड़ जाएगा.

"मेरी बेटियों ने, मेरी बात पर ध्यान नहीं दिया," बूढ़े व्यक्ति ने कहा, "उन्होंने हालात बदतर बना दिए हैं, उन्होंने कोटुरा को नाराज भी कर दिया. तुम मेरी आखिरी बची हुई बेटी हो, लेकिन फिर भी मुझे, तुम्हें इस उम्मीद में कोटुरा के पास भेजना होगा कि वो तुम्हें अपनी पत्नी बनाए. अगर मैं ऐसा नहीं करूंगा, तो हमारे सभी लोग भूख से मर जाएंगे. इसलिए बेटी तैयार हो, और जाओ."

और पिता ने बेटी को बताया कि उसे कहां जाना है और क्या करना है.

सबसे छोटी बेटी तम्बू से बाहर निकली, उसने स्लेज को इस तरह रखा कि वो हवा का सामना करे और फिर उसे फिसलने के लिए धक्का दिया. हवा बेहद तेज़ थी, और उसने सबसे छोटी बेटी के पैरों को गिराने की कोशिश की, और बर्फ ने उसकी आंखों को अंधा कर दिया था ताकि वो कुछ भी नहीं देख पाए.

लेकिन उस सबके बावजूद छोटी बेटी बर्फ़ीले तूफ़ान में आगे बढ़ती रही, वो अपने पिता के आदेश का एक भी शब्द नहीं भूली और उसने बिल्कुल वैसा ही किया जैसा उन्होंने बताया था. उसके कोट की डोरियां खुल गईं, लेकिन वो उन्हें बांधने के लिए नहीं रुकी. बर्फ उसके जूतों में घुस गई, लेकिन वो उसे हटाने के लिए नहीं रुकी. बहुत ठंड थी और हवा बहुत तेज़ थी, लेकिन फिर भी वो नहीं रुकी और आगे ही बढ़ती रही.

पहाड़ पर पहुंचने के बाद और उस पर चढ़ने के बाद ही रुकी और फिर उसने अपने जूतों से बर्फ हटाई और अपने कोट की डोरियां बांधीं. तभी एक छोटा पक्षी उड़कर उसके पास आया और आकर उसके कंधे पर बैठ गया. लेकिन सबसे छोटी बेटी ने पक्षी को नहीं भगाया. इसके बजाए, उसने उसे प्यार से सहलाया. जब पक्षी उड़ गया तो सबसे छोटी बेटी अपनी स्लेज पर चढ़ गई और पहाड़ी से नीचे सीधे कोटुरा के तम्बू तक पहुंची.

वो तम्बू में घुसी और इंतजार करने लगी. अचानक प्रवेश द्वार के ऊपर की खाल उठी और एक युवा राक्षस अंदर आया. जब उसने सबसे छोटी बेटी को देखा तो वो हंसा और उसने कहा:

"तुम मेरे पास क्यों आई हो?"

"मेरे पिता ने मुझे आपके पास भेजा है," सबसे छोटी बेटी ने उत्तर दिया.

"उन्होंने ऐसा क्यों किया?"

"तूफान रोकने के लिए आपसे विनती करने के लिए. क्योंकि यदि आप तूफ़ान नहीं रोकेंगे तो हमारे सभी लोग नष्ट हो जायेंगे."

"फिर तुम वहां पर बैठी क्यों हो? जल्दी से आग जलाओ और कुछ मांस पकाओ?" कोटुरा ने कहा, "मुझे भूख लगी है, और तुम्हें भी भूख लगी होगी, क्योंकि मैं देख रहा हूँ कि तुम जब से आई हो तब से तुमने कुछ भी नहीं खाया है."

सबसे छोटी बेटी ने जल्दी से मांस पकाया, उसे बर्तन से बाहर निकाला और उसे कोटुरा को दिया, और कोटुरा ने उसमें से कुछ खाया और फिर उससे आधा मांस पड़ोसी तम्बू में ले जाने को कहा.

सबसे छोटी बेटी मांस का बर्तन लेकर बाहर चली गयी. हवा ज़ोर-ज़ोर से गरज रही थी और बर्फ़ तेज़ी से घूम रही थी. उसे कहां जाना था? कोटुरा ने जिस तम्बू में जाने की बात कही थी वो कहां था? वो कुछ देर तक वहीं खड़ी रही, सोचती रही, और फिर वो तूफ़ान के बीच से निकल पड़ी. उसे खुद नहीं पता था कि वो कहां जा रही थी.

अचानक वही छोटी चिड़िया उसके सामने प्रकट हुई जो पहाड़ पर उड़कर उसके पास आई थी और वो आकर उसके चेहरे के पास उड़ने लगी थी. सबसे छोटी बेटी ने पक्षी का पीछा करने का फैसला किया. चिड़िया जिधर भी उड़ती, वो भी उधर जाती. वो चलती रही और आख़िरकार उसने कुछ दूरी पर एक चिंगारी की तरह चमकती हुई चीज़ देखी. सबसे छोटी बेटी बहुत खुश हुई और उस दिशा में चली, यह सोचकर कि तम्बू वहीं होगा.

लेकिन जब वह पास पहुंची, तो उसने पाया कि जिसे वह तम्बू समझ रही थी, वो असल में एक टीला था और उसमें से धुआं निकल रहा था. सबसे छोटी बेटी टीले के चारों ओर घूमी और उसने उसे अपने पैर से धकेला, और अचानक, टीले के किनारे, उसे एक दरवाजा दिखाई दिया. दरवाज़ा उसके सामने खुला, और उसमें से एक भूरे बालों वाली बूढ़ी औरत बाहर दिखी.

"तुम कौन हो? तुम यहां क्यों आई हो?" उसने पूछा.

"मैं आपके लिए कुछ मांस लाई हूं, दादी," सबसे छोटी बेटी ने उत्तर दिया."कोटुरा ने मुझे उसे आपको देने को कहा है."

"कोटुरा, तुम कहती हो? बहुत अच्छा, तो फिर मुझे वो दो. और तुम यहीं, बाहर प्रतीक्षा करो."

सबसे छोटी बेटी टीले के पास खड़ी होकर इंतजार करती रही. उसने काफी देर तक इंतजार किया. आख़िरकार दरवाज़ा फिर खुला, और बुढ़िया ने बाहर आई और उसने उसे तश्तरी वापिस दी. उसमें कुछ रखा था, लेकिन लड़की यह नहीं समझ सकी कि वो क्या था. उसने तश्तरी वापिस ली और उसे लेकर कोटुरा के पास लौट आई.

"तुम इतने समय तक क्या कर रही थीं?" कोटुरा ने पूछा. "क्या तुम्हें वो तम्बू मिला?"

"हां, मुझे मिला."

"क्या तुमने उन्हें मांस दिया?"

"हां."

"मुझे तश्तरी दिखाओ, मैं देखना चाहता हूं कि उसमें क्या है."

कोटुरा ने देखा, कि उस तश्तरी में कई चाकू थे और खाल की ड्रेसिंग के लिए स्टील की सुइयां और स्क्रेपर्स और ब्रेक भी थे. कोटुरा ज़ोर से हंसा.

उसने कहा, "तुम्हें कई अच्छी चीजें मिली हैं जो तुम्हारे लिए बहुत उपयोगी होंगी."
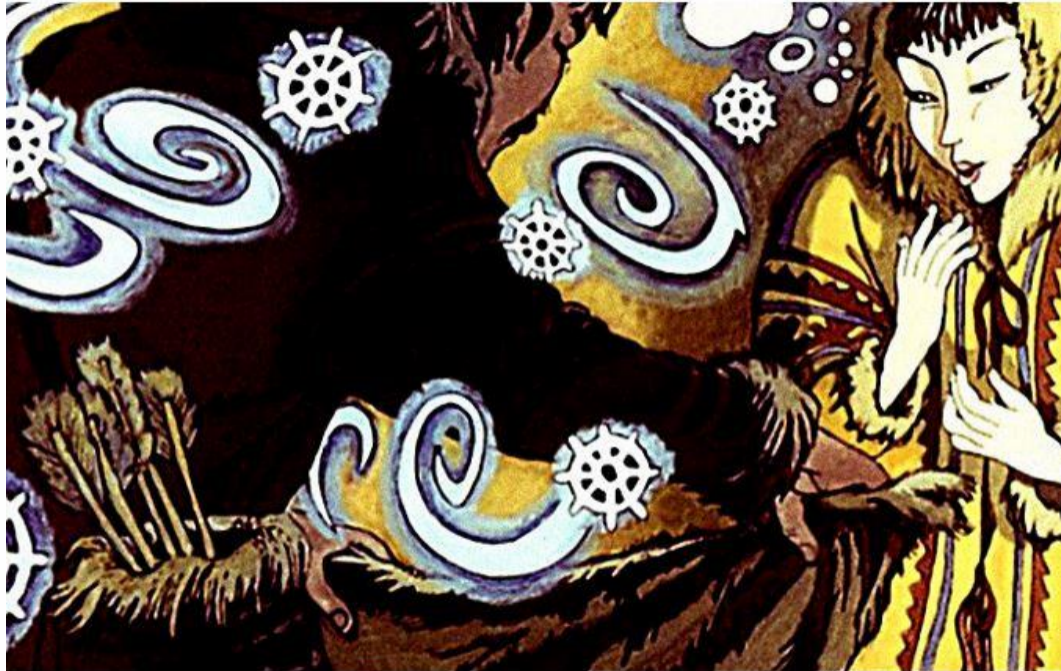
सुबह कोटुरा उठा और वो तम्बू में कुछ हिरण की खालें लाया. फिर उसने सबसे छोटी बेटी को शाम तक उसके लिए एक नया कोट, जूते और दस्ताने बनाने का आदेश दिया.

"अगर तुम उन्हें अच्छे से बनाओगी," उसने कहा, "मैं तुम्हें अपनी पत्नी बनाऊंगा."

कोटुरा चला गया, और सबसे छोटी बेटी काम करने लगी. बुढ़िया के उपहार बहुत उपयोगी सिद्ध हुए. सबसे छोटी बेटी के पास कपड़े बनाने के लिए सभी आवश्यक औज़ार थे. उसे यकीन नहीं था कि वो एक ही दिन में इतना कुछ कर पाएगी. उसने इसके बारे में सोचने में बिल्कुल समय बर्बाद नहीं किया और जितना संभव हो सका उतना काम करने की कोशिश की. उसने खालें तैयार कीं और उन्हें खुरचा, काटा और सिला. अचानक प्रवेश द्वार के ऊपर की खाल ऊपर उठी, और एक भूरे बालों वाली बूढ़ी औरत अंदर आई. सबसे छोटी बेटी ने तुरंत उसे पहचान लिया. वो वही बुढ़िया थी जिसके पास वो मांस ले गई थी.

"मेरी मदद करो, मेरे बेटी," बूढ़ी औरत ने कहा. "मेरी आंख में एक तिनका चला गया है. कृपया उसे निकाल दो. वो काम मैं खुद नहीं कर सकती."

सबसे छोटी बेटी ने मना नहीं किया. उसने अपना काम एक तरफ रख दिया और जल्द ही बुढ़िया की आंख से तिनके को बाहर निकाल दिया.
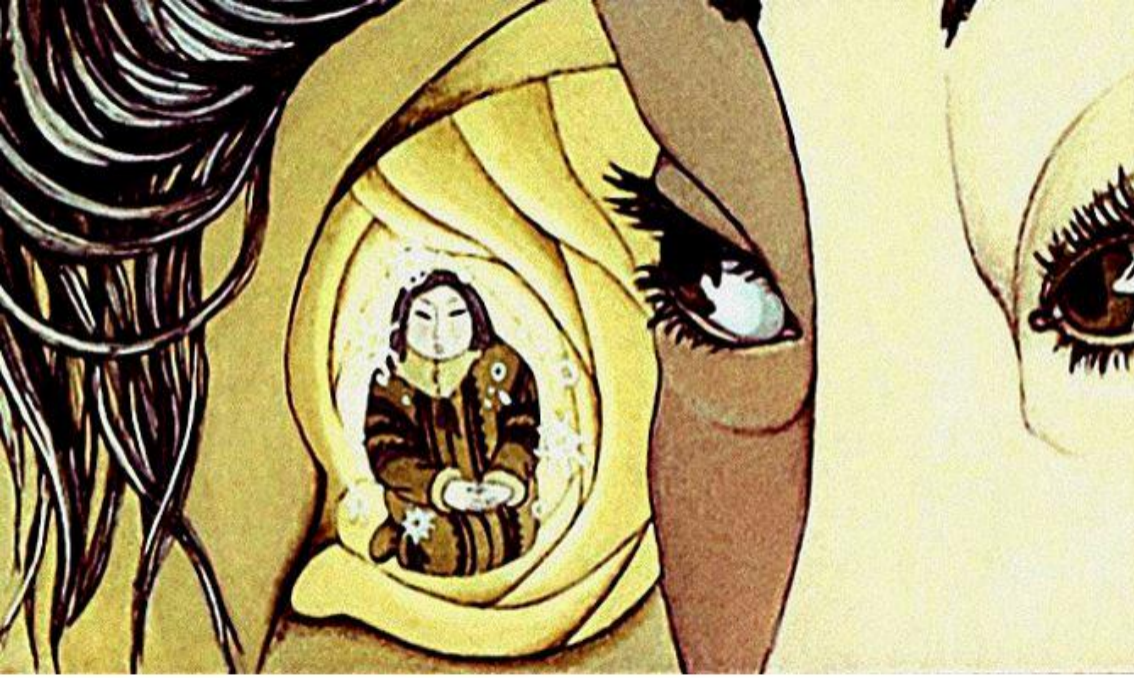
"अच्छा!" बुढ़िया ने कहा. "मेरी आंख में अब कोई दर्द नहीं है. अब मेरे दाहिने कान में देखो."

सबसे छोटी बेटी ने बुढ़िया के कान में देखा.

"तुम वहाँ क्या देख रही हो?" बुढ़िया ने पूछा.

सबसे छोटी बेटी ने उत्तर दिया, "आपके कान में एक लड़की बैठी है."

"तुम उसे बाहर क्यों नहीं बुलाती हो? वह कोटुरा के लिए कपड़े बनाने में तुम्हारी मदद करेगी."

सबसे छोटी बेटी बहुत खुश हुई और उसने उस लड़की को बुलाया. उसके बुलावे पर एक नहीं, बल्कि चार युवा लड़कियां बुढ़िया के कान के पास से कूद पड़ीं और चारों काम में लग गईं. उन्होंने खालों को तैयार किया और उन्हें खुरचा, उन्होंने काटा और फिर उसे सिल दिया. कपड़े शीघ्र ही तैयार हो गये. इसके बाद बुढ़िया ने चारों लड़कियों को फिर से अपने कानों में छिपा लिया और फिर वो चली गई.

जब कोटुरा वापस आया तो शाम हो चुकी थी.

"क्या तुमने वह सब कर लिया जो मैंने तुमसे करने को कहा था?" उसने पूछा.

"हां, मैंने सब काम कर लिए," सबसे छोटी बेटी ने उत्तर दिया.

"मुझे मेरे नए कपड़े देखने दो, मैं उन्हें पहन कर देखूंगा."

सबसे छोटी बेटी ने कोटुरा को कपड़े दिए, और कोटुरा ने लेकर उन पर अपना हाथ फेरा, त्वचा नरम और स्पर्श करने के लिए सुखद थी. उसने कपड़े पहने. वे न तो बहुत छोटे थे और न ही बहुत बड़े, लेकिन उसके लिए एकदम फिट थे और लंबे समय तक चलने वाले बने थे. कोटुरा मुस्कुराया.

"मैं तुम्हें पसंद करता हूं, सबसे छोटी बेटी, और मेरी मां और मेरी तुम्हारे जैसी ही चार बहनें हैं," कोटुरा ने कहा, "तुम अच्छा काम करती हो और तुम में साहस भी है. तुमने एक भयानक तूफान का सामना किया ताकि तुम्हारे लोग नष्ट न हो जाएं. तुम मेरी पत्नी बनो, और मेरे साथ तम्बू में रहो."

जैसे ही उसके मुंह से ये शब्द निकले, टुंड्रा में तूफान शांत हो गया. लोगों ने अब हवा से छिपने की कोशिश नहीं की, अब वे अपने तम्बुओं में अंदर नहीं रहे. फिर वे सभी, दिन के उजाले में अपने घरों से बाहर निकले!

अंत